सृजन-समीक्षा

अंतरा शब्दशक्ति का प्रकल्प

केन्द्रीय रचनाकार

● मीना विवेक जैन

सृजक-सृजन-समीक्षा

मीना विवेक जैन

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण: मृदुल जोशी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं| प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत: प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं | प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम ,पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं |

अन्तरा-शब्दशक्ति के में प्रस्तुत "सृजक"

मीना विवेक जैन का परिचय

नाम-मीना विवेक जैन
पिता-श्रीमान गुलाब चंद्र जैन
माता-श्रीमती विमला जैन
पति-श्री विवेक जैन
पता-श्रीमान विरेन्द्र जैन ,
जैन दूध डेयरी वारासिवनी, जिला बालाघाट(म.प्र.)

प्रकाशन- स्पंदन (साझा काव्य संकलन), Womenआवाज़ (साझा काव्य संकलन) अन्तरा-शब्दशक्ति, हिंदी सागर व लोकजंगमें रचनाएँ प्रकाशित।

सम्मान- अन्तरा-शब्दशक्ति सम्मान 2018

आत्मकथ्य- मेरा स्वभाव बचपन से ही थोड़ा संकोची एवं भावुक रहा है लिखने शौक तो था लेकिन संकोची स्वभाव के कारण महत्वकाँक्षायें अधूरी ही रह गई, शादी के पहले बस डायरियों मे ही लिखती थी लेकिन शादी के बाद मेरे इस शौक को परिवार वालों का साथ मिल गया और महत्वकाँक्षायें फिर जागने लगीं। ससुराल में पहली बार शरद पूर्णिमा के दिन हमारी जैन समाज में एक कवि सम्मेलन रखा गया जिसमें मुझे मेरे आदरणीय भैया(जेठजी) ने अपना काव्य पाठ करने के लिए प्रेरित किया, मंच पर कभी बोला नहीं फिर डर और झिझक के बाद भी मैंने अपना काव्य पाठ किया और वहीं से शुरू हुआ मेरा ये साहित्यि सफर , फिर जैन समाज के एक विख्यात कवि श्री सुरेश सिंघईजी ने मुझे एक साहित्यिक कार्यक्रम में आमंत्रित किया और मेरी मुलाकात हुई श्रीमती राजश्री तिवारी जी से और उन्हीं ने मेरा परिचय कराया आदरणीय प्रीति भाभी से और उन्होंने मुझे जोडा अंतरा-शब्दशक्ति से जिससे जुडकर मुझे लिखने की एक नई दिशा मिली रोज विषय पर लिखने का उत्साह बना रहता था, उन्होंने मेरी कुछ रचनाओं को लोकजंग में स्थान दिया और मुझे मेरे जीवन का पहला साहित्य सम्मान जो अभी इंदौर में मिला बस वही मेरी पहली उपलब्धि है, लेकिन इससे भी बडी उपलब्धि ये है कि मुझे अतंरा परिवार मिला जिसमें इतने बड़े साहित्यिकारों से मेरा परिचय हुआ, बस यूं ही साथ बना रहे हमेशा यही चाहती हूँ,..।

"सृजक का सृजन"

इक शहीद की पत्नी की ह्रदय वेदना

इक बार तो आ जाओ प्रियवर तुम
तरस रहे हैं ये नैना
देख न पाई कब से तुमको
तडप रहा दिल पड़े न चैना

ये कैसा दिन आया प्रियेवर
साथ हमारा छूट गया
प्रेम से भरे खजाने को कब
कोई लुटेरा लूट गया

बिन तेरे अब क्या जीना रे
हाय बिधाता!अब क्या होगा?
बिन पापा के इन बच्चों का
बचपन जाने क्या होगा?

देश की खातिर दूर रहे तुम
ये सब मैंने सहन किया
पर क्यों जान लुटा दी ऐसे
मुझे तड़पता छोड़ दिया।

झर झर आँसू बहते जांये
कोई तो उन्हें बुला दे रे
शायद होगा सपना ये सब
कोई तो मुझे जगा दे रे

देर करो न अब तो मेरी
बात जरा सी सुन लेना
इक बार तो आ जाओ प्रियवर तुम
तरस रहे हैं ये नैना।

तलाश करने निकली हूँ

मैं अपने ही वजूद को
क्या है मेरा अस्तित्व
आखिर कुछ तो हुनर
होगा मुझ में भी
अब तो ठान ली हूँ
अपने ही मन में
निराश नहीं होना है
अब इस जीवन में
गुजर गए इतने वर्ष बस ऐसे ही
सारहीन हो गए हैं
अनमोल जीवन के
इतने सारे लम्हे
अब एक एक पल की
कीमत मुझे आँकना है
जो बीत गया सो बीत गया
अब उसमें नही झाँकना है
बस तलाश करना है
इस बचे हुए जीवन में
अपनी पहचान की
अपने अंदर छिपी हुई
उस प्रतिभा की
जिससे सार्थक होगें
जीवन के अनमोल पल,.. !!!

कितना अच्छा लगता है

कितना अच्छा लगता है
जब मिल बैठे परिवार।
हंसी खुशी चर्चा करें,
बड जाये प्रेम अपार।।

मन में जब लग जायेगी
अपने अपनो की प्रीत।
टूट जायेगी दुनिया की
फिर अलग होने की रीत।।

सदा साथ रहने का जब हम
दृण निश्चय लें मन में ठान।
सुखी रहेगा जीवन अपना
और बढ जायेगा मान।।

दूरियाँ

समय के साथ यहाँ
सब कुछ बदल जाता है
बढे जो कदम तो कदम
तो रास्ता निकल आता है

"दूरियाँ" हो जाती हैं
अपनो से अक्सर
जब गैरों से नया रिश्ता
निकल आता है

खबर नहीं रहती है हमें
अपने ही लोगों की और
गैरों की खबर लेनें को
घर से निकल जाता है

समय के साथ यहाँ
सब कुछ बदल जाता है,..!!!

ए कलम

ए कलम तू लिख दे ऐसा
जिसे पढें सारा जहाँ
भूल जायें दुश्मनी सब
जुल्म के न हों निंशान

न लडें आपस में कोई
देश की शक्ति बने
हर तरफ खुशियां ही खुशियां
सपने सच पूरे करें

हो निराली शान ऐसी
विश्व में सम्मान हो
हो निराला देश ऐसा
जिस पर हमें अभिमान हो

सिख् ,ईसाई रहे हो
या हिन्दू मुसलमान हो
चाहे कोई भी धर्म हो पर
राष्ट्र धर्म का भी ज्ञान हो
ऐ कलम तू लिख दे ऐसा..... !!!

माँ मुझे तुमसे कुछ कहना है

जो कुछ तुमसे सीखा है
वह तुमसे ही कहना है,
मैं तो तुमको छोड चली
अब दूजे घर में रहना है
बहू तुम्हारी साथ में है अब
माँ तुमको उनकी बनना है
मेरी याद न करना माँ अब
बहू को बेटी कहना है
अब वही तुम्हारे घर की लक्ष्मी
अब वही तुम्हारा गहना है
सदा लुटाना ममता उस पर
उसका जीवन खुशियों से भरना है
यह सोच के माँ मैं भी
खुश हो जाऊँगी
बेटी का तुमको प्यार मिले
मेरी माँ का ये घर परिवार
सुखमय और खुशहाल रहे,.. !!!

जिंदगी है जब तक

खुशी और गम तो
मिलते ही रहेंगे
हौंसले का पकडकर
दामन हम तो बस
चलते ही रहेंगे
बहुत कुछ पाने की
चाहत थी दिल में
पा न सके सोचकर
खलते ही रहेंगे
जख्म इस दिल के
न भर जायें जब तक
मरहम हम उन पर
मलते ही रहेंगे !!!

सृजन की समीक्षा

1.

सबसे पहले साप्ताहिक रचनाकार के रूप में मीना को बहुत सारी **बधाई एवं शुभकामनाएँ।**

पहली रचना में

देश के खातिर दूर रहे तुम ये सब मैने सहन किया ।

बिल्कुल सही है किन्तु एक प्रियतमा के लिए अपने प्रियतम के लिए विरह वेदना तो असहनीय है ही इसका चित्रण इस रचना मे बखूबी किया गया है।

दूसरी रचना में अपने वजूद को तलाशने का अंतिम किन्तु सार्थक प्रयास।

तीसरी रचना में परिवार से प्रीति।

चौथी रचना में अपनो से दूरियाँ।

पाँचवीं रचना में कलम की ताकत।

छठवीं रचना में माँ और पुनः माँ के ही आशीर्वाद से
श्रेष्ठ बहू के रुप मे पुनः बेटी के रुप में।

और सातवीं रचना में बुलंद हौसला ।

इस तरह सब कुछ हमारी भान्जी मीना ने अपने ढंग से साहित्यिक अंदाज मे अपनी अंतर की आवाज को शब्दों का रुप दिया है।

मेरा बहुत बहुत आशीर्वाद।

राजेन्द्र जैन'अनेकांत',
बालाघाट (म.प्र.)

2.

प्रिय मीना दीदी सादर वन्दे।

आपका सौम्य व्यक्तित्व आपके आत्मकथ्य से स्पष्ट झलक रहा है। साहित्यकार होना एक अस्वाभाविक शक्ति है जो सबकी कलम में नहीं होती है माँ वानी बानी सहृदय लोगों को चुनती है अपने वरद हस्त के लिए। उन्हे

चुनती है उद्देश्य के लिए। आपकी न तो साहित्यिक पृष्ठभूमि है और नहीं विरासत में मिला कोई नाम। आप लिखती रही और ईश ने आपको आशीर्वाद के साथ अवसर भी दे ही दिया कलम का सारथी बनने का।

आपकी लेखनी अनवरत चलती रहे कामना है। आमीन।

आपकी प्रत्येक रचना में विविधता और सरसता है। **अंतस को भिगोती शहीद प्रियवर को लिखी पाती, माँ, विशुध्द राष्ट्रप्रेम की भावना। अति उत्तम है। वजूद तलाशती ऊर्जा भरी स्त्री, परिवार और दूरियां रचनाएँ सरस अभिव्यक्ति है।** अन्तरा-शब्दशक्ति के बारे में आपके विचार सअक्षर सत्य है। अपनी ही कंदराओं में भटकती हम जैसी स्त्रियों के लिए उजास आकाश की उड़ान प्रीति समकित सुराना दीदी ही दे सकती है।

पुनः नमन। शुभेच्छा सहित।

वन्दना "चारू"

खरगोन (म.प्र.)

3.

रचनाकार की रचनाओं को पढ़ना और उनसे मिलकर उनके व्यक्तित्व को समझना लगभग एक सा ही है। बहुत सहज भाव व सरल शब्दों में प्रत्येक रचना उनके ही इर्दगिर्द बसी दुनिया से निकली हुई प्रतीत होती है। केंद्रीय रचनाकार के रूप में प्रस्तुति हेतु **बधाई** एवं साहित्य यात्रा हेतु **शुभकामनाएँ** प्रेषित करता हूँ।

डॉ. अर्पण जैन 'अविचल'

इंदौर (मप्र)

4.

मीना जी के आत्मकथ्य से ज्ञात होता है कि आप निश्चित ही काव्य लेखन विधा में स्वतः पारंगत है । जिसमें निखार अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार के माध्यम से आया है । आपकी दबी हुई प्रतिभा को अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार ने उजागर किया है ये साहित्य जगत और साहित्यकार दोनो के लिये बड़े खुशी की बात है ।

आपकी पहली रचना शहीद की पत्नि की पीड़ा का भाव बखूबी इस रचना में समाया है । देश की खातिर जान लुटा देने पर गर्व करती और फिर पारीवारिक वेदना पर भाव विव्हल करती वेदना रचना । बेहद कमाल है । अगली रचना तलाश करने निकली हूं में कहीं कहीं आपके स्वयं के ऊपर की हुई रचना प्रतीत होती है जैसा आपने आत्मकथ्य में लिखा है । सचमुच अपना वजूद तलाशना चाहिये । क्योंकि हर व्यक्ति के अंदर कुछ ना कुछ प्रतिभायें छुपी होती है । जिसे निखारने की प्रेरणा का बोध कराती सुन्दर रचना है । परिवार से जुड़े रहने में जो सुख महसूस होता है उसका कुशल समावेश किया है आपने अपनी तीसरी रचना में । अगली रचना में दूरियां में आपने अपनों के बीच दूरियां कब हो जाती हैं ये वास्तव मे कोई सोच भी नहीं पाता । बहुत खूब । आपकी अन्य रचनायें ऐ कलम, माँ एवं जीवन पर आधारित है । **बेहद कुशलता से विषयानुरूप रची गई है । आप एक कुशल अवं काबिल रचनाकार हैं। आपकी कलम बहुत शानदार है । आपकी लेखनी निरंतर प्रगति करे हमारी बहुत बहुत शुभकामनायें ।**

डॉ. अनिल कुमार कोरी,
जबलपुर (म.प्र.)

5.

केंद्रीय रचनाकार विशेषांक में प्रस्तुत मीना जी का हार्दिक अभिनन्दन। कितना सुन्दर, सहज , सरल परिचय और आत्मकथ्य , अनायास ही आकर्षक लग रहा है। बहुत बड़ा सौभाग्य है कि परिवार वालों का साथ मिला और आपकी प्रतिभा सामने आई। ईश्वर के घर सारे सिस्टम सेट हैं। आपकी रचनाएँ पढ़ने का अवसर मिलता रहा है। आपका अपने सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना आपके व्यक्तित्व में निखार ला रहा है। यह एक बिरला गुण है जो आपको विशेष बना रहा है। अन्तरा वास्तव में प्रतिभाओं को ढूँढ़कर ला रहा है।
आपकी पहली रचना इक शहीद की पत्नी की हृदय वेदना, बहुत मार्मिक चित्रण है।
दूसरी रचना तलाश करने निकली हूँ , सहज, सरल अभिव्यक्ति और वास्तव में हर लड़की के दिल की आवाज़ है।
तीसरी रचना परिवार, काश ऐसा हर परिवार में हो जाए, खूबसूरत कल्पना।
चौथी रचना, दूरियाँ, समय के साथ हर चीज परिवर्तित हो जाती है, रास्ते, मंजिलें, पुराने रिश्तों में दूरियाँ और नये रिश्तों के प्रति रुझान। वास्तविकता दिखाती हुई बेमिसाल रचना।
पाँचवीं रचना ऐ कलम, एकता, अखंडता की परिकल्पना लिए हुए बेहतरीन सृजन,
छठी रचना संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति माँ के लिए सुन्दर संदेश दिया गया है।
सातवीं रचना जिंदगी हौसले का साथ हो तो खुशी और ग़म दोनों का समय आराम से निकल जाता है।
बहुत खूब मीना जी। आपको उज्जवल भविष्य के लिए ढेरों शुभकामनाएँ।

पिंकी परुथी "अनामिका"
कोटा(राजस्थान)

6.

मीना विवेक जैन अन्तरा-शब्दशक्ति के लिए एक जाना पहचाना नाम है । शुरूआती संकोच से उबर कर, उनकी लेखनी रफ़्तार पकड़ने लगी है । व्यक्तित्व की सरलता उनकी रचनाओं में झलकती है । यदि चन्द टँकण त्रुटियों को दरकिनार करें तो सहज और प्रभावी कथ्य उनके सृजन का हिस्सा हैं । भाव भी अनायास प्रसूत होते हैं ।

शहीद की पत्नि की हृदय की वेदना, उन तमाम पत्नियों की वेदना का सार्वत्रिक चित्रण है जिनके पति अपने कर्तव्य निर्वहन के दौरान देश पर कुर्बान हो जाते हैं ।

दूसरी रचना तलाश करने निकली हूँ :-स्वयं में खुद की खोज का सनातन और मौलिक प्रश्न और उससे जुड़े उत्तर का सृजन, और स्वयम् को अर्थहीन जीवन से उबार , एक सार्थकता प्रदान करने का, विश्वास तथा उत्साह का सृजन है ।

कितना अच्छा लगता है :-एक पारिवारिक माहौल में संग-साथ की उपादेयता और जरूरत का सृजन है ।

दूरियाँ:- अपने और पराये रिश्तों के दरमियाँ बॉन्डिंग की जाँच पड़ताल का सृजन है ।

चुने हुए रिश्ते ,
प्रकृति प्रदत्त रिश्तों पर भारी हैं इन दिनों ,
ये भयावह सामाजिक स्थिति है ।
इसे बख़ूबी उकेरा है ।

क़लम :-एक अच्छी रचना है जहाँ सृजन मन उससे सब अच्छा ही अच्छा लिखने के वादा करना चाह रहा है ।

जहाँ सामाजिक समरसता , देश के लिए सम्मान और प्रेम का जज्बा और आपसी भाई चारा मुखर हो ।

माँ मुझे तुमसे कुछ कहना है :-एक बेटी नेक सलाह माँ को देना चाहती है ,जहाँ वह बहू के रूप में अपना ही बिम्ब छोड़, ससुराल जा रही है । माँ उसे अपनत्व

और स्नेह दे और बेटी की कमी महसूस न करे । खूबसूरत आख्यान है और परिवारों की खुशहाली का एक सूत्र भी वे हमें यहाँ सौंपती हैं ।
अंतिम रचना ज़िंदगी की ऊँच नीच को समर्पित है । न पाने का मलाल और ज़ख्मों की स्वयं ही चारागरी ।

बहुत खूब!
शिल्प के लिए मेहनत की दरक़ार है ।
भाव भूमि समृद्ध है ।
शब्दों के सही उच्चारण और लिखने पर अतिरिक्त प्रयास करना होंगे ।
उज्ववल भविष्य की मंगलकामनाएं ।।
जय हो,विजय हो ।

ब्रजेश शर्मा 'विफल'
झाँसी (उ.प्र.)

7.

मीना खुद जितनी सरल है उतने ही उसके भावों की अभिव्यक्ति भी। भाव व कथ्य की प्रगाढ़ता शिल्प के कच्चेपन में भी गीली मिट्टी सी महक से आबद्ध होकर मन मोहित है। आशा है अन्तरा-शब्दशक्ति परिवार व चाक बन पाएगा जो सशिल्प तुम्हारी लेखनी को गढ़ सकेगा। **निरंतर प्रगतिशील साहित्यिक जीवन यात्रा के लिए शुभकामनाएं।**

डॉ. प्रीति सुराना
वारासिवनी (मप्र)

अन्तरा-शब्दशक्ति के व्हाट्सअप एवं फेसबुक समूह में १३ नवम्बर २०१६ दिन रविवार से हर रविवार को 'सृजक-सृजन-समीक्षा विशेषांक' आरम्भ किया गया जिसमें 'सृजक' का परिचय, 'सृजक का सृजन' और पाठकों की भूमिका में समूह के अन्य सभी सदस्यों द्वारा की गई 'सृजन की समीक्षा' को अन्तरा-शब्दशक्ति के फेसबुक पेज और समूह पर सहेजा गया है। अब तक वरिष्ठ और नवोदित रचनाकारों सहित लगभग ६५ रचनाकारों को प्रस्तुत किया जा चुका है और आगे भी गतिविधि सतत क्रियान्वित है।

'सृजन-समीक्षा' एक प्रयास है 'सृजक के सृजन को समीक्षा सहित' पाठकों तक वेबसाइट पर ईबुक और मुद्रित पुस्तकों के माध्यम में महत्वपूर्ण दस्तावेज की तरह सहेजने का। आशा है यह महत्वपूर्ण दस्तावेज सृजक और साहित्य जगत दोनों के लिए अनमोल धरोहर बनेगा।

अनंत शुभकामनाओं सहित।

डॉ. प्रीति सुराना

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

सहयोगी संस्थान

हिन्दीग्राम भाषा समन्वयक
www.hindigram.com

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhashaa.org

मातृभाषा वैचारिक महाकुम्भ
www.matrubhashaa.com

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन
१५ नेहरू चौक, मेन रोड बारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१
संपर्क:९४२४७६५२५९ । अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com